Research Journal of Language, Literature and Humanities _____ISSN 2348-6252
Vol. **2(5),** 6-8, May **(2015)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

व्यक्तित्व विकास में सहायक गतिविधियों का तुलनात्मक अध्ययनः बी.एस.एन. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शाजापुर (मध्यप्रदेश) के संदर्भ में

अरुण कुमार बोड़ाने
बी.एस.एन. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शाजापुर मध्यप्रदेश, भारत

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 22nd april 2015, revised 1st May 2015, accepted 15th May 2015

शोध सारांश

मानव का व्यक्तित्व संपूर्ण, विनम्र और दुनिया के लिए उपयोगी बनता है शिक्षा के माध्यम से । उचित शिक्षा एवं व्यवहार से मानवीय गरिमा, स्वाभिमान और विश्व बंधुत्व में वृद्वि होती हैं। हाल ही में उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के समस्त महाविद्यालयों में व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ का गठन किया जाना भी जरूरी किया गया और साथ ही इसके क्रियान्वयन हेतु समस्त महाविद्यालयों में क्रियाशील समिति का गठन कर वर्ष भर कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिए गये। निश्चित ही यह कदम समस्त विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होगा, साथ ही उन्हें आत्मविश्वास से भरकर जीवन के प्रतिकूल समय में भी डटकर सामना करना सिखायेगा। जरूरी हैं इसमें विद्यार्थियों की भागीदारी पूर्ण रूप से हो एवं महाविद्यालयों में इसका रुचिपूर्वक क्रियान्वयन किया जाये। उक्त अध्ययन से पता चलता है कि महाविद्यालयों में संचालित एन.एस.एस., एन.सी.सी., व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ, यूथ रेडक्रास, स्वामी विवेकानंद केरियर मार्गदर्शन, युवा उत्सव आदि अन्य योजनाएँ एवं कार्यक्रम व्यक्तित्व विकास में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

शब्द–कुंजीः शिक्षा, उच्च शिक्षा, शिक्षक, संरचना, व्यक्तित्व विकास।

प्रस्तावना

प्रत्येक मनुष्य का अपना–अपना व्यक्तित्व होता जिससे वह पृथक एवं पहचाना जाता है। मनुष्यों की लाखों की भीड़ में भी वह अपने अलग व्यक्तित्व के कारण पहचान लिया जाता है। यही उसका व्यक्तित्व है। प्रकृति का यह शाश्वत नियम है कि एक मनुष्य की आकृति एवं संरचना दूसरे मनुष्य से निश्चित ही भिन्न या अलग होगी। प्रत्येक विद्यार्थी एक बेकार पत्थर की तरह होता है, जिसमें एक सुन्दर मूर्ति छिपी होती और जिसे किसी शिल्पी की आँख ही देख या पहचान पाती है। वह उसे तराश कर सुन्दर मूर्ति में बदल सकता है, ठीक इसी प्रकार माता–पिता, शिक्षक और समाज भी बालक को सँवार कर खूबसूरत व्यक्तित्व प्रदान करते हैं। किसी भी देष का संपूर्ण विकास वहॉ की उचित शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा का अर्थ अपने एवं अपने परिवार, देश एवं समाज से सम्बंधित हैं जिस पर सामाजिक एवं बौद्धिक गुणों का विकास भी निर्भर करता हैं। अंग्रेजी के कैम्ब्रिज अन्तर्राष्ट्रीय शब्दकोश के अनुसार आप जिस प्रकार के व्यक्ति हैं, वही आपका वास्तविक व्यक्तित्व होता और वह आपके विचारों, आचरण तथा संवेदनशीलता से व्यक्त होता है[1]। व्यक्ति सामान्यतः अपने व्यक्तित्व की वजह से ही सामान्य, महान, विख्यात तो कोई बहुत कुख्यात होता है[2]।

अध्ययन क्षैत्र

शाजापुर नगर मध्यप्रदेश के मालवांचल में स्थित एक जिला है जोकि इतिहास, साहित्य एवं संस्कृति का विशिष्ट केन्द्र रहा है। आगरा–मुम्बई राजमार्ग पर स्थित शाजापुर नगर के इस शासकीय महाविद्यालय की स्थापना सन् 1957 में एक सार्वजनिक संस्था 'जनता अर्न्तमहाविद्याालय' के रूप में हुई थी। विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से सन् 1958 में इसे केवल कला संकाय हेतु स्नातक महाविद्यालय के रूप में सम्बद्धता प्राप्त हुई । सन् 1960 एवं 1961 में क्रमशः वाणिज्य संकाय तथा विज्ञान संकाय की कक्षाए भी इस महाविद्यालय में प्रारंभ की गई। ग्राम भ्याना जिला शाजापुर में जन्में हिन्दी के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि एवं महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की स्मृति में इस महाविद्यालय का नामकरण पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' महाविद्यालय के रूप में किया गया। प्रबन्ध समिति ने 1 जुलाई 1961 को इस संस्था को शासन को सौंप दिया। इस महाविद्यालय को स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रूप में मान्यता सन् 1972 में शासन द्वारा प्रदान की गई। वर्तमान में यह महाविद्यालय शाजापुर जिले का अग्रणी महाविद्यालय चयनित एवं चिंहित किया गया है[3]।

अध्ययन विधि

उक्त अध्ययन हेतु महाविद्यालय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के 100–100 विद्यार्थियों से व्यक्तित्व विकास में सहायक गतिविधियों जैसे–एन.एस.एस., एन.सी.सी., व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ, यूथ रेडक्रास, स्वामी विवेकानंद केरियर मार्गदर्शन, युवा उत्सव आदि अन्य योजनाएँ एवं कार्यक्रम के बारें में मौखिक चर्चा की गयी। जिनका मत तालिका क्रमांक–01 में अंकित किया गया है।

कार्य का उद्देश्य

उक्त कार्य का उद्देश्य महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में व्यक्तित्व विकास में सहायक गतिविधियों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है।

व्यक्तित्व विकास के गुणधर्म का विष्लेषण

व्यक्तित्व विकास गुणधर्म का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि लोग अपनी विशेषताओं और व्यवहार के व्यक्तिगत प्रतिमानों द्वारा एक–दूसरे से पृथक एवं पहचाने जाते है। किसी भी व्यक्ति की शारीरिक भाषा उसके व्यक्तित्व के बारें में बहुत कुछ जानकारी प्रदान करती है। एक सुंदर मुस्कान के साथ उचित अभिव्यक्ति आपके व्यक्तित्व को ज्यादा निखार सकती है। वार्तालाप के समय आपको हॅसमुख, आत्मविश्वास से भरा एवं एकाग्र रहना भी जरूरी होता है। एकाग्रचित्तता से तात्पर्य व्यक्ति की ईच्छा और आवश्यकता के साथ उचित संतुलन बनाना होता है। यदि कोई व्यक्ति चाहता है कि दूसरे व्यक्ति के साथ उसका वार्तालाप सही, फायदेमंद तथा सूचनाप्रद हो तो सुनने की कला को अधिक विकसित करना अति आवश्यक हो जाता है। मौखिक व अमौखिक अभिव्यक्तियां जब पूर्ण रूप से मिल जाती हैं तो अभिव्यक्ति क्षमता निष्चित ही बढ़ जाती है। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि व्यक्ति अपने बचपन की अवस्था से विकसित होकर किशोरावस्था तत्पष्चात वयस्क अवस्था तक पहुंचता है इस दौरान वह एक विशेष प्रकार का व्यवहार और सोच विकसित कर लेता है जो कि उसके आसपास मौजूद विभिन्न परिस्थितियों का प्रतिफल होता है[4]।

प्रदेश की नवीन युवा नीति–2008

प्रदेष की वर्तमान युवा नीति का मुख्य उद्देश्य प्रदेश की उच्च शिक्षा के वातावरण में एक ऐसी ऊर्जा का संचार करना है, जिससे प्रदेश के युवाओं की सोच सकारात्मकता हो, उनकी ऊर्जा का राज्य के विकास में उपयोग हो और उन्हें अपने समग्र विकास जैसे– व्यक्तित्व, शैक्षणिक एवं आर्थिक विकास का अवसर मिले एवं वह देश का एक आदर्श, जागरूक एवं जिम्मदार नागरिक बन सके[5]।

उद्देश्य एवं लक्ष्यः शिक्षा का वातावरण निर्मित करना, जिसमें युवा अपनी योग्यता को निखारते हुए आवश्यक कौशल अर्जित कर सके तथा आर्थिक रूप से सशक्त हो सके। युवाओं के व्यक्तित्व एवं नेतृत्व गुणों का विकास करना, जिससे कि युवा देश, प्रदेश एवं समाज के विकास में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करने में सक्षम हो सके। युवाओं की सृजनात्मक ऊर्जा को अभिप्रेरित करना तथा उनमें साहसिक निर्णय लेने, खेलकूद एवं अन्य गतिविधियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मकता भावना की क्षमता का विकास करना। उच्च शिक्षा को रोजगारोन्मुखी एवं व्यवसायिक बनाना। सभी वर्तमान पाठ्यक्रमों का पुर्नमूल्यांकन करना। उच्च शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर शोध एवं उद्योग संस्थानों का शिक्षण संस्थानों के साथ समन्वय स्थापित करना।

व्यक्तित्व विकास में सहायक गतिविधियॉं

व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठः उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश ने सन् 2014 से समस्त महाविद्यालयों में राष्ट्रशक्ति के रूप में छात्रशक्ति को विकसित करने हेतु व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ का गठन अनिवार्य किया गया[6]।

जिसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है मनोविकारों से मुक्त युवाओं का निर्माण करना। भारतीय संस्कृति और परम्परा का सम्यक बोध कराना। युवाओं में भारतीयता का भाव जाग्रत करना। भारतीय नैतिक मूल्यों का परिपालन एवं संवर्धन करना। व्यक्तित्व निर्माण और उसका अनवरत विकास करना।

इसके अलावा महाविद्यालयों में संचालित एन.एस.एस., एन.सी.सी., यूथ रेडक्रास, स्वामी विवेकानंद केरियर मार्गदर्शन, युवा उत्सव एवं समय–समय पर महाविद्यालयों में होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन से विद्यार्थियों में व्यक्तित्व एवं कौशल विकास के साथ साथ जन सेवा, देश सेवा, कार्य की प्रति रूचि, निर्णय लेने की क्षमता, अनुशासन, सहनशीलता आदि गुणों के विकास में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

Table-1
Votes of Students (In Numbers)

Sr. No.	Programmes/Activity	Votes of UG Level Students	Votes of PG Level Students
01	Personality Development Cell	81	79
02	N.C.C.	79	80
03	N.S.S	77	78
04	Youth Redcross	60	62
05	Swami Vivekanand Carrier Cell	67	65
06	Youth Festival	52	55
07	Others	49	50

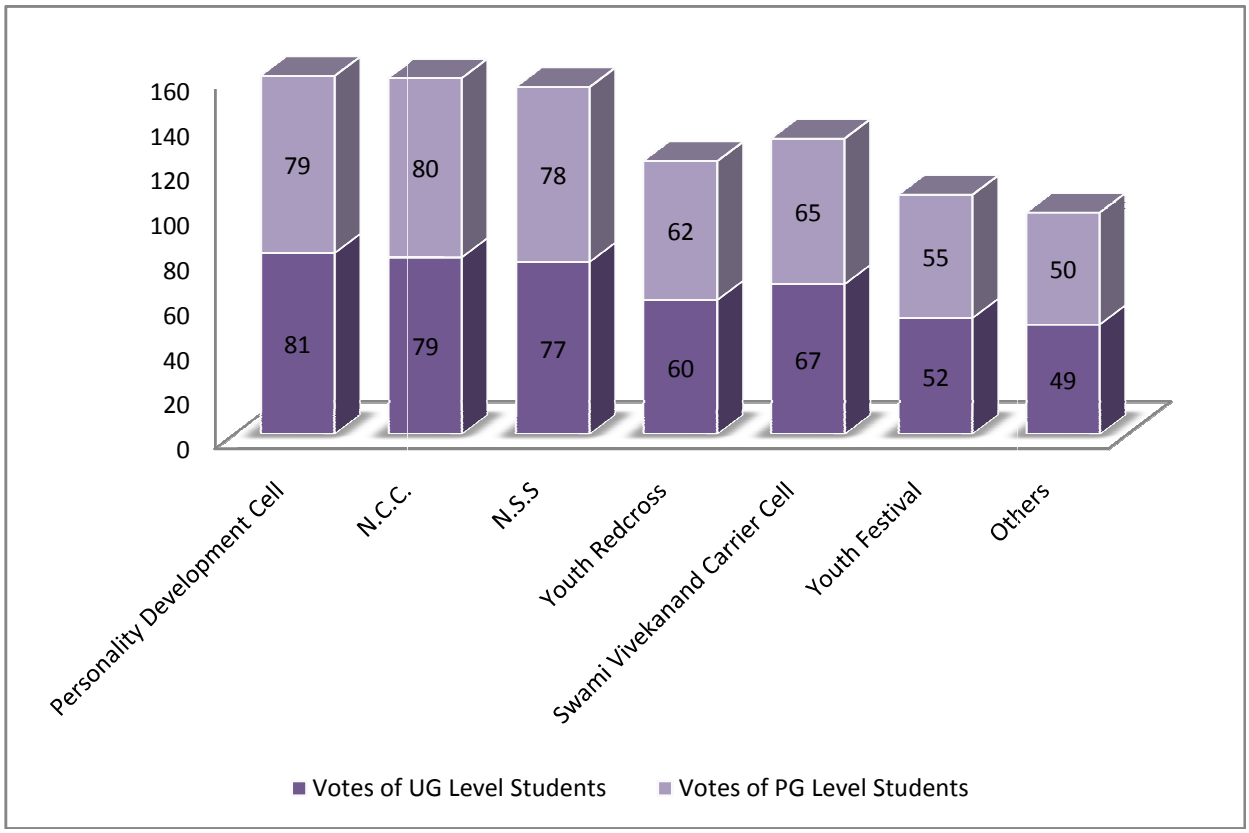

Figure-1
Graphical Representation of Table No. 01

निष्कर्ष

निश्चित ही व्यक्तित्व विकास सफलता की कुंजी है। उच्च शिक्षा में व्यक्तित्व विकास की पहल विद्यार्थियो के लिए लाभदायक होगी। विद्यार्थियो को चाहिए की वह अपना लक्ष्य निर्धारित करे और उसे पाने में तन, मन एवं एकाग्रता से जुट जाये। शिक्षा में गुणवत्ता और भारतीय संस्कृति का परस्पर संतुलन बनाये रखना अति आवश्यक हैं। परिणामस्वरूप उत्पादक प्रतिभा एवं मानवीय चरित्र से युक्त सक्षम युवा उत्तम एवं जागरूक नागरिक बनकर परिवार को सुख, समाज को समृध्दि एवं राष्ट्र को गौरव प्रदान कर सकेंगे।

उक्त अध्ययन से पता चलता है कि महाविद्यालयों में संचालित एन.एस.एस., एन.सी.सी., व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ, यूथ रेडक्रास, स्वामी विवेकानंद केरियर मार्गदर्शन, युवा उत्सव आदि अन्य योजनाएँ एवं क्रार्यक्रम व्यक्तित्व विकास में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

सन्दर्भ सूची

1. बद्येल संजयसिंह, सफलता की कुंजी व्यक्तित्व विकास, लाईव हिंदुस्तान.कॉम, जुलाई–23, **(2014)**
2. मिश्रा गोपाल, प्लीसेंट पर्सनॉलिटी डेवलप करने के दस बिंदु, अच्छीखबर.कॉम, जून–17, **(2013)**
3. http://www.mpcolleges.nic.in/bksnpgcshajapur., **(2007)**
4. मिश्रा ए.के., कैसे करें व्यक्तित्व विकास, देशबंधु वेबपेज प्रकाशन, जून–17, **(2012)**
5. http://mpinfo.org/MPinfoStatic/hindi/policies/yuva/index.asp, **(2008)**
6. http://www.highereducation.mp.gov.in/PersonalityDevelopment/PD_DrishtiPatra_15200514.pdf, **(2014)**